|  |
| --- |
| 12. Februar 2023 |
| **06. Sonntag im Jahreskreis A** |
| Erste Lesung: Sir 15,15-20; Zweite Lesung:1 Kor 2,6-10; Evangelium: Mt 5,17-37 (oder 5,20-22a.27-28.33-34a.37) |
|  |  |  |
| Eröffnung: | GL 381, 1-3! | Dein Lob, Herr  |
|  |  |  |
| Kyrie: | GL 163, 6 | Herr Jesus |
|  |  |  |
| Gloria: | GL 715 | Es jubelt aller Engel Chor |
|  |  |  |
| Antwortgesang: | Ps 119, 1-2.4-5.17-18.33-34 |
|  | Kehrvers:  |  |
|  | GL 31, 1 | Selig der Mensch |
|  | oder Lied: |  |
|  | GL 543, 1+2+5 | Wohl denen, die da wandeln |
|  |  |
| Halleluja-Ruf: | Ruf: GL 174, 5 |  |
|  | Vers: |  |
|  | *Sei gepriesen, Vater, Herr des Himmels und der Erde;* |
|  | *du hast die Geheimnisse des Reiches den Unmündigen*  |
|  | *offenbart.* |
|  |  |  |
| Credo: | GL 802 | Den Taufbund wir erneuern |
|  |  |  |
| Gabenbereitung: | GL 146, 1-3! | Du rufst uns, Herr, an deinen Tisch |
|  | GL 457, 1-3 | Suchen und fragen |
|  |  |  |
| Sanctus: | GL 718 | Heilig |
|  |  |  |
| Friedensgruß/ | GL 798, 1+2 | Wo Meschen sich vergessen |
| Agnus Dei: | GL 203 | O Lamm Gottes |
|  |  |  |
| Danksagung:  | GL 421, 1-3 | Mein Hirt ist Gott der Herr |
|  | GL 796, 1+4+5! | Herr, wir bitten: Komm  |
|  |  |  |
| Schluss: | GL 384, 2 | Hoch sei gepriesen |
|  | GL 385, 2+3 | Nicht sterben wird ich |
|  |  |  |